आर सी एफ शेती पत्रिका

किसानों का पहला पसंदीदा मासिक

आर सी एफ
साथ बढ़े समृद्धि की ओर

कृषि समृद्धि की मार्गदर्शिका

वर्ष 11 अंक - 8 मुंबई फरवरी 2020 पृष्ठ- 24

दृढनिश्चयी। बहुजनों का आधार
अखंड स्थिति का निर्धारक। श्रीमंत योगी।
श्री शिवाजी महाराज ।।

संपादकीय

विश्व मंच पर हमारा सबसे अधिक आबादी वाला और युवा देश के रूप में उदय हुआ है इसलिए भारत में अभी भी कृषि प्रधान संस्कृति को सम्मानित किया जाता है। खाद्यान्न आपूर्ति के मामले में आत्मनिर्भर बनने के लिए कृषि प्रधान देश होना हमारी ताकत है। बढ़ती आबादी के लिए दो समय के पौष्टिक और स्वास्थय वर्धक भोजन की आपूर्ति करना, यह केवल कृषि प्रणाली के प्रगति पथ पर होने के कारण संभव हुआ है। लेकिन वर्तमान वैश्विक जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि व्यवसाय को कई आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। इनमें से प्रमुख समस्याएं कीटों और रोगों की प्रतिरोधक क्षमता में कमी और उसके कारण फसल उत्पादन में कमी होना है। कृषि व्यवसाय में उतरने के लिए जमीन अर्थात मिट्टी के विषय में जानाकारी होना आवश्यक पहलुओं में से एक है। इसमें मिट्टी की भौगोलिक, जैविक स्थिति के साथ–साथ सेंद्रिय कर्ब और रासायनिक अन्न घटकों की उपलब्धता की जानकारी होना बहुत महत्वपूर्ण है। फसल की वृद्धि और अधिक उपज के लिए अनुशंसित रासायनिक आदानों का उपयोग करना हमेशा हानिकारक नहीं होता है। कृषि विद्यापीठों के अनुसंधान विभागों द्वारा उपज वृद्धि करने की दृष्टि से उर्वरकों का संतुलित उपयोग करने की भी सिफारिशें की गई हैं। इनमें जैविक और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग पर मार्गदर्शन भी किया गया है।

हमारे देश के पेशेवर कृषि व्यवसायिकों में, मुख्य रूप से जिनका उल्लेख किया जाये तो वह युवावर्ग हैं जो चुनौतीपूर्ण वातावरण में दिन–रात मेहनत कर रहा है। नवीनतम कृषि तकनीक को अपनाकर देश को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने में योगदान दे रहें हैं। आधुनिक कृषि विज्ञान के निर्माण में कृषि योजना निर्धारक, कृषि विद्वान और विस्तार कर्मचारी इन सभी के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता हैं। अब यह सिद्ध हो गया है कि ज्ञान के अभाव में कोई प्रगति संभव नहीं है। केवल उत्पादन में वृद्धि पर जोर देने से काम नही चलेगा, बल्कि अन्नधान्य की पोषकता, उनका लंबे समय तक टिकना और उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति बढ़ाने पर भी ध्यान देना आवश्यक है। ग्रामीण युवाओं, महिला वर्ग को भी कृषि और कृषिजन्य व्यवसायों में उपलब्ध संसाधनों पर आधारित कुटीर उद्योगों के माध्यम से आर्थिक समृद्धि की ओर अग्रसर होना चाहिए।

आरसीएफ शेती पत्रिका मासिक के पिछले महीने के विदेशी सब्जी विशेषांक को राज्य के युवावर्ग द्वारा उत्साही प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई जिसके लिए सभी को हार्दिक धन्यवाद, साथ में गणतंत्र दिवस के अवसर पर आरसीएफ द्वारा सम्मानित किए गए किसान भाईयों और बहनों को उनके कृषि विकास भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामानाएं!

आपका धन्यवाद

(श्री.एन. एच. कुरणे)
कार्यपालक संचालक (विपणन)

सफलता की कुंजी

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। प्रत्येक मनुष्य में किसी से बात करने की, अपने विचार व्यक्त करने की आंतरिक आवश्यकता निहित होती है। आवश्यक जानकारी श्रोता तक पहुँचाने के लिए बोलने वाले व्यक्ति का संवाद कौशल में निपुण होना आवश्यक होता है। यदि उसमें यह कला नहीं है, तो उसका अपेक्षित श्रोता सुनता तो है, लेकिन उस जानकारी का अर्थ श्रोता तक निश्चित रुप से पहुंचा है या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता। संवाद कौशल जन्मजात या आनुवंशिक रूप से नहीं प्राप्त होता है। यह शिक्षक के मार्गदर्शन, संबंधित व्यक्ति के पठन, भाषा की महारत, आत्म विश्वास, आस–पास का माहौल और सहसंवादन इन सभी कौशलों का संयुक्त योगदान होता है!

संवाद

अंतरंग

3	देशी मुर्गी पालन
8	करेला: स्वास्थ्य के लिए गुणकारी सब्जी
10	टमाटरः रोग और कीट नियंत्रण
11	सूरजमुखी फुलों की खेती में रोगों का नियंत्रण
12–13	हमारी सामाजिक प्रतिबद्धता...
14	पौराणिक फूलों की जानकारी और पहचान
16	सुरन खेती तकनीक
18	आधुनिक पद्धति से विदेशी सब्जी और फल उत्पादन
21	विचार मंथन

साथ बढ़े समृद्धि की ओर

संपादकः श्री.नुहू हसन कुरणे

Editor : Nuhu Hasan Kurane

संपादकीय समन्वयन–श्री.मिलिंद आंगणे

Editorial Co-ordination - Milind Angane

(022-25523022)

• सलाहकार समिति • • Advisory Committee •

श्री. नरेंद्र कुमार	Mr. Narendra Kumar
श्री. गणेश वरगंटीवार	Mr. Ganesh Wargantiwar
श्री. माल्कम क्रियाडो	Mr. Malcolm Creado
सौ. निकीता पाठार	Mrs. Nikita Pathare
श्री. लीलाधर महाजन	Mr. Liladhar Mahajan

शेती पत्रिका अब निम्नलिखित वेब साईट पर उपलब्ध है

www.rcfltd.com

देशी मुर्गी पालन

डॉ. गोपाल मंजुळकर, विषय विशेषज्ञ – पशु विज्ञान,कृषि विज्ञान केंद्र अकोला, मो. 9822231923

किसानों के घर की बात की जाए तो उसमें पशुपालन हमेशा शामिल होता है! मुख्य रूप से गाय, भैंस, बकरी और मुर्गी पालन आदिव्य वसाय कृषि पूरक आय प्रदान करते हैं। इनमें से पोल्ट्री बहुत आसान, कम लागत वाला, कम जगह लेने वाला और कम परिश्रम में होने वाला व्यवसाय है। इनमें से ब्रायलर की तुलना में देशी मुर्गी पालन में अधिक संभावना है। क्योंकि देशी अंडे उत्पादन यह व्यवसाय नियमित आय के साथ अतिरिक्त व्यवसाय के रुप में कई किसानों के परिवारों का पोषण कर रहा है।

पोल्ट्री या मुर्गी पालन एक ऐसा उद्योग है जो कृषि पूरक है और व्यापक रूप से अच्छे अवसर प्रदान करता है। बकरी पालन के व्यवसाय की तरह मुर्गी पालन भी मुर्गियों को मुक्त करके या पिंजरों मे बंद रख कर, दोनों प्रकार से किया जा सकता है। खुली मुर्गियां आम तौर पर देशी नस्ल की होती हैं।

यदि विदेशी मुर्गियों को खुला छोडा जाता हैं, तो उन्हें बिल्लियों की तरह के पशु या चील, गिद्ध आदि का खतरा होता है। लेकिन देशी मुर्गियों में खुद को इन जानवरों और पक्षियों से बचाने की क्षमता होती है। इसलिए इन मुर्गियां को खुला छोडने में कोई खतरा नही होता है। मुर्गी पालन में, मुर्गियों की नई नस्लों को खुला नही छोडा जाता है उनके लिए एक पिंजरा बनाना पडता है।

Follow : rcfkisanmanch on

facebook twitter instagram

क्योंकि इन मुर्गियों में खुद की रक्षा करने की क्षमता नहीं होती है।घर के बाग में या आंगन में, या घर के आस–पास दस से बीस देशी मुर्गियां पालने पर वे खुद अपना भोजन खोज कर खाने का इंतजाम कर लेती हैं। यदि दस मादाओं के साथ एक नर मुर्गा है, तो उनकी नस्ल बढ़ती रहती है। इन मुर्गियों की बहुत करीबी निगरानी नहीं करनी पडती है। चूंकि इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होने के कारण दवा –उपचार के साथ भोजन और पानी की जरूरत भी कम खर्चीली होती है। देशी मुर्गियां पालने के लिए ज्यादा खर्च नहीं करना पड़ता है। अंडो के साथ ही इनके अंडे से चुजे भी लिये जा सकते है जिससे उनकी संख्या बढ़ती है, और इसलिए समय–समय पर चुजें खरीदने की जरूरत नहीं पडती है।

हालांकि, पिंजरे में पलने वाली मुर्गियों के मामले में, मुर्गियों की एक पीढ़ी समाप्त होने के बादए नये चूजें खरीदने पडते हैं। देशी मुर्गियों को पालना किफायती होता है जब तक की मुर्गियों की संख्या 30 से 40 तक होती है, मुर्गियों को आसानी से पाला जा सकता है। बड़ी संख्या में व्यवसाय करने पर मुर्गियों का पोषण करना आसानी से संभव नही होता है। शाम को आराम करने के लिए मुर्गियों के लिए सुरक्षित जगह होना जरूरी होती है। बिल्ली, लोमड़ी, कुत्ता, सरीसृप जानवरों से इनका संरक्षण करना आवश्यक होता है, उसके लिए आंगन मे ही एक तरफ लकड़ी का बक्सा बना कर रख देना चाहिए। जो जमीन से कम से कम एक फुट ऊंचा होना चाहिए, जिससे सरीसृप जानवर अंदर ना घुस सके। साथ ही जमीन गीली होने पर उससे नुकसान भी नहीं होगा। ये बक्सा जमीन पर पक्की तरह से चिपक कर रहना चाहिए, ताकि कोई चोर उन्हें उठा कर ना ले जा सकें। मुर्गियों को आराम से बैठ सके इसके लिए बक्से में एक से तीन खाने बनाने चाहिए। रोज शाम को मुर्गियों के बैठने से पहले हर एक खाने में राख फैलानी चाहिए, जिससे रात भर मल की नमी राख में समा सके। राख को मल के साथ हर सुबह एकत्र किया जा सकता है, इससे पिंजरे में से बदबू भी नहीं आएगी। साधारण रूप से प्रति एक पखवाड़े के अंदर साइपरमेथ्रिन / अमट्रेज यह कीटनाशक कम मात्रा में लेकर बक्से के अंदर या बाहर से छिड़काव करने से मुर्गियाँ पिस्सू और जूँ से पीड़ित होने से बचती हैं। रक्त शोषक कीटों के कारण मुर्गियाँ कमजोर होती हैं, परिणाम स्वरूप अंडे कम देने लगती हैं और साथ में उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कम हो जाती है। बक्से की छत यदि टीन की हो तो मुर्गियों का वर्षा से बचाव होता है मुर्गियों का मल यदि गड्ढों में जमा किया जाता है तो इससे अच्छी गुणवत्ता का खाद भी तैयार की जा सकता है।

अंडा उत्पादन के लिए विभिन्न नस्लें : आज कम अवधि में तैयार होने वाली क्रॉस ब्रिड्स की नस्लें उपलब्ध हैं, उनमें से –

वाईट लेग हॉर्न : औसत अंडे का उत्पादन 200–250 प्रति वर्ष। **ब्राउन लेग हॉर्न :** औसत उत्पादन लगभग 280–300 अंडे प्रति वर्ष। **रोड आइलैंड रेड :** वजन में बढ़त धीमी होती है। छह महीने के बाद अंडों का उत्पादन शुरू होता है। एक चक्र में 220 से 250 अंडे उत्पादन होता है। **ब्लैक एस्ट्रालर्प :** तीन महीने में दो किलो तक वृद्धि होती है ए और एक चक्र में 160 से 200 अंडा उत्पादन।

जब आप केवल देशी अंडों के उत्पादन की बात करते हैंए तब कुछ विशिष्ट जातीयां आँखो के सामने आती है, उन में से –

◆ **देशी पक्षीः** इस नस्ल से एक वर्ष में 150 अंडे मिलते हैंए और इस नस्ल के मुर्गों के मांस की अच्छी मांग रहती है।

बेहतर नस्लें: ◆ **ग्रामप्रियाः** दो महीने में एक किलोग्राम वजन की बढत और एक अंडा चक्र के दौरान 180 से 200 अंडों का उत्पादन होता है।

◆ **गिरिराजः** दो महीने में एक किलो वजन में बढत और एक अंडा चक्र में 150 अंडों का उत्पादन होता है।

◆ **वनराजः** दो महीने में एक किलो वजन में बढत और एक अंडा चक्र में 120 से 160 अंडों का उत्पादन होता है।

◆ **कड़कनाथः** पांच महीने में एक किलो वजन में बढत और एक अंडा चक्र में 60 से 80 अंडों का उत्पादन होता है।

दैनिक प्रबंधन : हैचरी से एक दिन में 100 चुजे प्रति बक्से के रूप में पैक कर के दिए जाते हैं। चूजे स्वस्थ, निरोगी और चुस्त होने चाहिए। साथ ही पहले दिन उन्हें मैरेक्स नाम का टीका देना सुनिश्चित किया जाना चाहिए। चुजे खेत में लाने के दौरान, धीमे–धीमे, बहुत अधिक हिले बिना लाने का इंतजाम किया जाना चाहिए। जैसे ही चूजे खेत में आते हैं, बॉक्स खोलकर चूजों की मृत्यु हो गई है क्या? यह जांचें । मृत चूजों को तुरंत अलग किया जाना चाहिए। लगभग एक लीटर पानी उबालने के बाद उसे ठंडा कर उसमे 100 ग्राम गुड़ या इलेक्ट्रोल पाउडर मिलाएं। फिर प्रत्येक चूजे की चोच इस पानी में दो से तीन बार भिगोएं,उन्हें पानी पीना सिखाएं तथा चूजों को नियंत्रित तापमान तैयार किए गये ब्रुडर में छोडे। पहले कुछ घंटों में चुजों का गुड़ का पानी पीना बहुत जरूरी है क्योकि गुड पानी की वजह से चूजों की आंतों में मौजूद चिपचिपा पदार्थ बाहर आता है और पेट साफ होने में मदद करता है। ऐसा नही होने पर मल की जगह बंद होकर उनकी मौत हो सकती है।

लगभग चार घंटे के बाद, मकई का दलिया या चावल के दाने, खाने के लिए डालने चाहिए। दूसरे दिन से 'चिक स्टार्टर' यह खाद्य देना शुरु करना चाहिए। आमतौर पर पहले 21 दिनों तक ब्रुडिंग करना चाहिए उसके बाद चुजों के अंग पर पंख उगने लगते हैं जिससे वे खुद ही खुद का तापमान नियंत्रित कर सकते हैं। अगले कुछ दिन चूजों को शेड में रखना चाहिए और फिर परिसर में मुक्त छोडना चाहिए। एक महीना खत्म होने के बाद, चुजों को 'चिक फिनिशर' यह खाद्य शुरू करना चाहिए।

ब्रुडिंग (अंडे सेना) : जब मशीन की मदद से चुजे पैदा होते हैं या खरीदे जाते हैं तब उनके साथ उनकी मां नहीं होती है। इसलिये उन्हें कृत्रिम उष्णता देनी पडती है, जिसे वैज्ञानिक भाषा में 'ब्रुडिंग' कहा जाता है। एक दिन के चुजे पर कोई पंख नही होते हैं, जिस कारण वह अपना तापमान नियंत्रित नही कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें कृत्रिम उष्णता ब्रुडर द्वारा देनी पड़ती है। इसमें पक्षीयों को बहुत सावधानी से संभालना आवश्यक होता है।

ब्रुडिंग के समय ध्यान रखने वाली सावधानियां

इस अवधि में चुजों के मरने की अधिक संभावना है, इसलिए, पर्याप्त देखभाल बहुत महत्वपूर्ण होती है। ब्रुडिंग का तापमान सही अनुपात में रखा जाना चाहिए तथा सही मात्रा में एंटीबायोटिक्स और विटामिन देना चाहिए। 18 से 19 दिनों तक प्रोटीन युक्त आहार, जिसे 'स्टार्टर' कहा जाता है देना चाहिए। 21 दिनों के अंत में, ब्रुडर से चुजों को निकाल कर 'हार्डनिंग' के लिए छोडना चाहिए। अधिक संख्या में देशी मुर्गी पालन के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाना चाहिए।

विकास की अवधि (चार से पांच महीने):

विकास काल के दौरान पक्षियों की देखभाल करना आवश्यक होता है। इस स्थिति में नर और मादा पक्षियों को अलग–अलग रखना चाहिए और अनावश्यक नर पक्षियों को बेच देना चाहिए। अथवा इन्हें मांस व्यवसाय के लिए अलग से बढाना चाहिए। इस दौरान उचित शारीरिक विकास बहुत महत्वपूर्ण होता है. इन्हें मुफ्त गतिविधि उपलब्ध करवाना और "ग्रोवर फीड" खिलाना चाहिए। जिसमें 15 से 16 प्रतिशत प्रोटीन होना चाहिए। साथ ही सही खनिज मात्रा तथा विटामिन से भरपूर के खाद्य के साथ साफ पानी की आपूर्ति करना भी अपेक्षित है।

मुर्गियों को लासोटा बूस्टर, फोल्पॉक्स बूस्टर इनका टीकाकरण करना चाहिए। अगर मुर्गियां अंडा उत्पादन के लिए पाली जा रही हैं तो उन्हें हर महीने बूस्टर खुराक देना चाहिए। अंडे देने की अवस्था (छह से 18 महीने) 24 सप्ताह की उम्र के होने पर पक्षी अंडे देना शुरू करते हैं। इस कालावधि के अंतर्गत 18 से 19 प्रतिशत प्रोटीन युक्त आहार जिसे "लेयींग मेश" कहा जाता देने की शुरुवात करना चाहिए। उसके साथ 5

प्रतिशत कैल्शियम का खाद्य स्त्रोत भी प्रदान करें। अंडे देने के लिए नेस्ट बॉक्स मुहैया कराना चाहिए, प्रति 5 मुर्गियों में एक नेस्ट बॉक्स इस अनुपात में रखना चाहिए। साधारणतः 72 सप्ताह की उम्र तक उत्पादन लिया जाना चाहिए।

पंख झडने की अवस्था (Moulting): अंडे देने के बाद पक्षी "मौल्टिंग"इस चरण में जाते हैं, जिसमें पक्षी अपने पंखों को झाडते हैं और उनके स्थान पर नये पंख आते हैं। संभवतः इस स्तर पर पक्षीयों को बेचा जाना चाहिए। इस चरण के बाद बडी मात्रा में अंडा उत्पादन प्राप्त नहीं होता है।

देशी मुर्गियों के खाद्य पदार्थ : देशी मुर्गियाँ सारा दिन घूम कर स्वयं अपने खाने की तलाश करती हैं। खुले आंगन में मुर्गियों को पर्याप्त अनाज या कीट मिलना मुश्किल होता है। साथ ही अन्य पशु पक्षी भी ऐसे खाद्य पदार्थों की तलाश करते हैं, जिस कारण दिन भर भटकने के बावजूद देशी मुर्गियों को पेट भर खाना नहीं मिलता है। यही सच्चाई है। जिसके परिणाम स्वरुप अंडा उत्पादन पर्याप्त नहीं है। इसके लिए आंगन में मुर्गियों के खाने की पर्याप्त व्यवस्था करना जरूरी होता है।

मुर्गियों से अंडे के उत्पादन के लिए प्रोटीन युक्त भोजन की आवश्यकता रहती है। इसके लिए मक्का, ज्वार, बाजरा, गेहूं, चावल आदि जैसे एक–सलीय अनाज उन्हें पोषक तत्व प्रदान करता है और उसे मुर्गियाँ पसंद भी करती हैं। दिन में एक या दो बार उनके सामने मुट्ठी भर अनाज आंगन में डालना वांछनीय है। इनके लिए निम्न दर्जे का साफ किया हुआ अनाज का चयन भी किया जा सकता है। उनके आहार में मांसाहार खाद्य की आपूर्ती भी करना चाहिए। एक बार बाजार से सुखी मछली लाकर भी देना चाहिए। ज्यादतर लोग मटन, मच्छी अपने खाने के लिए लाते ही हैं उसमे से फेका जाने वाला भाग सुखा कर मुर्गियों को दिया जा सकता है। इनके लिए हरी सब्जियों की भी जरूरत होती है। मुर्गियाँ मेथी, हरी धनिया जैसी सब्जिया खाना पसंद भी करती हैं। खासकर गर्मियों में मुर्गियों को हरे साग की कमी होती है इस समय अनाज वाले खाद्य पदार्थ भी दिए जा सकते है। स्थानीय और स्वदेशी मुर्गियों को अच्छी खुराक खिलाने पर उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। यदि किसान बड़ी मात्रा में देशी मुर्गियों का पालन करते हैं, तो निम्लिखित खाद्य देना चाहिए।

भोजन के प्रकार: 1. चिक मेश फूड, 2. ग्रोवर मेश फूड, 3. लेयर मैश फूड, 4. लेयर कॉन्सट्रेट, 5. प्रीमिक्स आदि इनमें से पहले तीन खाद्य पूरी तरह से तैयार खाद्य पदार्थों में आते हैं और उन्हें मुर्गियों को आयु वर्ग के अनुसार दिया जाना चाहिए।

खाद्य देते समय बरती जाने वाली सावधानी

मुर्गियों की जाति, प्रकार, श्रेणी, आयु समूह, भौगोलिक वातावरण,उत्पादन क्षमता, उनके आनुवंशिक गुण आदि को ध्यान में रखते हुए मुर्गियों को उचित खाद्य घटक युक्त पौष्टिक और संतुलित आहार दिया जाना चाहिए। प्रोटीन, ऊर्जा, विटामिन, कार्बोहाइड्रेट और खनिज आदि घटकों से संतुलित भोजन दिया जाना चाहिए। भोजन को बहुत अधिक समय के लिए संग्रहीत नहीं किया जाना चाहिए।

रोग संरक्षण: देशी मुर्गियाँ भोजन की तलाश में पूरे दिन घुमते हुए जो भी कीड़े मिलते हैं उन्हें खाती हैं। साथ ही वह गंदे क्षेत्र जैसे कि आसपास की नालियां, दलदल आदि से भोजन खाती हैं। जिससे उन्हे संक्रामक रोग, विशेष रूप से पेट में कीड़ों की बीमारी होती है। स्पष्ट रुप से इस कारण मुर्गियों को पोषण और अंडे के उत्पादन के लिए पर्याप्त आहार नहीं मिलता है। आमतौर पर इसके लिए पशु चिकित्सालय से नियमित रूप पेट के कीडों की दवाई नियमित रूप से दी जानी चाहिए। खुली मुर्गियों को दस्त की बिमारी भी हो सकती है। यह रोग होने पर सफेद चाक पावडर का आधा चम्मच पोटेशियम परमैंगनेट के गुलाबी पानी में मिलाकर, एक से दो दिन तक देना चाहिए। या फिर किसी पशु चिकित्सालय से दवाइयाँ लेकर देना चाहिए। मुर्गियों को पिस्सू, जुएँ, जैसे रक्त शोषक कीट लगने पर पाँच प्रतिशत "गैमेक्सिन पावडर" को

उनके पंखो पर लगाना चाहिए। खुली मुर्गियों को कोई ना कोई संक्रमण रोग हर साल होता है। खासतौर पर "रानीखेत" बिमारी हर साल होती है और इसके लगने से औसतन 60 प्रतिशत मुर्गियाँ मर जाती हैं। बहुत से दडबे पूरी तरह खाली हो जाते हैं। इस रोग का संक्रमण ज्यादातर गर्मियों में सबसे अधिक होता है। इसलिए गर्मियों से पहले रोग प्रतिरोधक टीकाकरण हर साल करने से निश्चित रुप से रोग से छुटकारा मिलता है। मुक्त मुर्गियों के लिए देवी रोग के संक्रमण होने की बहुत ज्यादा संभावना होती है। इस रोग की वजह से होने वाली मृत्यु दर अधिक नहीं है, परंतु इसके कारण अंडे का उत्पादन कम हो जाता है, इसलिए देवी रोग प्रतिरोधक टीकाकरण भी नियमित करना चाहिए। रोग प्रतिरोधक टीकाकरण एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है इसके लिए किसानों को सही समय पर टीकाकरण करना आवश्यक होता है। इस तरह से स्थानीय मुर्गियों का व्यवसाय करने से किसानों को नियमित पौष्टिक खाना और उत्पादन में वृद्धि के कारण आर्थिक रूप से भी लाभ होगा। किसानो को एक दिन के चूजों से शुरुवात करनी चाहिए। एक दिन के चूजे से शुरुवात करने पर उन्हें अंडे देने लायक होने तक की उम्र तक अंदाजन 120 से 150 रुपये तक खर्चा होता है।

मुर्गी पालन व्यवसाय करते समय अंडे की बिक्री के साथ एक बढिया मुर्गी उर्वरक भी मिलता है। घर का बचा हुआ खाना, सब्जियां, अनाज या अंतर–फसल के रूप में उगाया गया मक्का इनका उपयोग करने पर उत्पादन लागत और भी कम की जा सकती है। पिछवाड़े के आंगन में मुर्गी पालन द्वारा अधिक अंडे और अधिक मांस आदि का दोहरा लाभ पशु पालकों को हो सकता है।

पेट की भूख, खाली जेब, टूटे मन और मिला हुआ व्यवहार जो सिखाता है, वह कोई डिग्री नहीं सिखा सकती है ...!

कृषि सलाह

- तापमान में वृद्धि के कारण आम की फसल पर टिड्डों और फूल चींटियों के प्रसार की संभावना होती है। फसल पर टिड्डें , फूल चींटियों और भूरी रोग से रक्षा करना जरूरी होता है। इसके लिए फूल खिलते समय कीटों और बीमारियों का नियंत्रण करने के लिए लैम्ब्डा साइहैलोथ्रिन (पांच प्रतिशत प्रवाही) 6 मि.ली. के साथ हेन्जाकोनाजोल (पांच प्रतिशत प्रवाही) 5 मि.ली. प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर उपयोग करना चाहिए।
- फसल की फूल अवस्था में काजू पर संक्रमण रोग और फूल चींटियों के नियंत्रण के लिए इसके फूल खिलते समय प्रोफेनोफौस (50 प्रतिशत प्रवाही) एक मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करना चाहिए.
- नारियल पर रगोज स्पिरलिंग व्हाइट फ्लाई कीटों का प्रभाव देखने में आता है। इस मक्खी के कारण पत्तों पर काली फफूंद की वृद्धि दिखाई देती है। इसके नियंत्रण के लिए इमीडाक्लोप्रिड (17.8 प्रतिशत प्रवाही) 0.30 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
- गर्मी में सूरजमुखी फसल की बुवाई के समयः ग्रीष्म – फरवरी (पहला सप्ताह). उन्नत नस्लः फुले भास्कर, एस. एस. 56, मॉडर्न, भानू, एस.एल.11, फुले रवीराज (संकरित)
- मिर्ची की फसल को नाइट्रोजन उर्वरक की दूसरी किस्त में प्रति एकड़ 65 किलो यूरिया फूल और फल धारण के समय दिया जाना चाहिए। साथ ही रस–शोषक चींटियों का प्रसार को रोकने के लिए डाइमेथोएट (30 प्रतिशत प्रवाही) एक मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर मिश्रण का छिड़काव किया जाना चाहिए।

मिट्टी बोले किसान से फसल को दें सुफला–उज्ज्वला खाद। जो देगा आपको धन और अनाज, कसम आपको समृद्धि की ।।

करेलाः स्वास्थ्य के लिए गुणकारी सब्जी

डॉ. ए. एस. नाफडे, उद्यान विद्या विशेषज्ञ, डी – 6 ए ब्रह्मा मेमोरीस, भोसले नगर, पुणे –411007 मो. 9822261132

लोगों को करेले की सब्जी शायद उसकी कड़वाहट की वजह से पसंद नहीं होती है। लेकिन इस सब्जी में कई औषधीय गुण मौजूद होते हैं। करेले में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, फास्फोरस, लोह, पोटेशियम, मैग्नीशियम, विटामिन ए, सी, और अन्य पोषक तत्व भी पाये जाते हैं।

करेला शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाने में मदद करता है और काफी सारी गंभीर बीमारियों से बचाए रखता है। वजन कम करने से लेकर मधुमेह, पत्थरी जैसी समस्याएं दूर रखने में भी इसका उपयोग किया जाता है। करेले में लोह भरपूर होता है। यह एंटीऑक्सिडेंट, विटामिन और खनिजों से समृद्ध सब्जी है।

➢ मधुमेह नियंत्रण के लिए: कड़वा करेला इंसुलिन के जितना ही प्रभावी है। असल में, एक गिलास करेले रस पीना इतना प्रभावी है कि इसे पीने से मधुमेह के रोगियों को उनकी दवा की खुराक कम करने में भी मदद करता है। मधुमेह के रोगियों के लिए करेले का सेवन बहुत ज्यादा लाभकारी होता है। यह रक्त में मौजूद शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है।

➢ त्वचा और बालों के लिए: करेले में एंटीऑक्सिडेंट और विटामिन "ए" और "के" भरपूर मात्रा में होते हैं। ये त्वचा के लिए फायदेमंद होते हैं। यह उम्र बुढ़ापा कम करता है। त्वचा पर दाग, सोरायसिस और खुजली जैसे विभिन्न त्वचा संक्रमण उपचार करने हेतु करेला काफी उपयोगी है। इसका रस बालों में चमक लाता है और रूसी, बालों का झड़ना बंद करता है।

➢ यकृत की कार्यकारिता के उपयुक्त: करेला यकृत के स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी है। यह यकृत को स्वच्छ बनाए रखता है और उसकी कोशिकाओं की निर्मती में मदद करता है। यकृत लंबे समय तक अच्छा काम कर सकता है। मूत्राशय और आंतों के लिए भी करेला खाने से उनकी क्षमता बढाता है।

➢ पाचन के लिए उपयोगी: करेला रेशेदार होने के कारण आतों में पाचन क्रिया में मदद करता है। इस सब्जी के सेवन से कब्ज दूर होती है। करेला पाचन के लिए उत्कृष्ट होता है। करेले में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट पाचन क्रिया में तेजी लाता है।

➢ ह्रदय स्वास्थ्य में सुधारः कड़वे करेले के कारण एलडीएल (कोलेस्ट्रॉल) घटता है और दिल का दौरा पड़ने का खतरा कम होता है।

➢ करेला कैंसर रोग की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है : करेला प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और एलर्जी को रोकता है। इसका सबसे बड़ा फायदा कैंसर से लड़ने के लिए होता है। करेले का नियमित सेवन करने पर स्तन और प्रोस्टेट कैंसर का खतरा भी बहुत कम हो जाता है। इस वनस्पति का लगभग सभी क्षेत्रों में एंटीकैंसर के गुण मौजूद हैं।

➢ वजन प्रबंधनः कम कैलोरी और फाइबर–युक्त होने के कारण वजन कम करने में करेला काफी मदद करता है।

➢ घाव भरने में मददः करेले में तीव्र उपचारक के गुण होते हैं। जो घाव को जल्दी भरने और संक्रमण को कम करने में मदद करता है।

➢ रक्त शोधकः करेले में काफी अधिक

मात्रा में एंटीऑक्सिडेंट होने के कारण यह दुषित रक्त से संबंधित कई समस्याओं का समाधान करने में मदद करता है। करेले के नियमित सेवन से त्वचा, बाल और कैंसर की बिमारियों में सुधार होता है। साथ ही खून के परिसंचरण में सुधार करता है।

➢ शरीर में उत्साह पैदा करता है नियमित रूप से करेले का सेवन करने से बाद शारीरीक शक्ति और ऊर्जास्तर में महत्वपूर्ण सुधार दिखाता है। करेला नींद की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है और निद्रानाश जैसी नींद की समस्याओं को कम करता है।

➢ आँखो के लिए फायदे करेला विटामिन "ए" से समृद्ध होता है, यह मोतियाबिंद को रोकता है और आँखो की दृष्टि को प्रबल बनाता है।

➢ करेले से अन्य लाभ: पीलिया यह बीमारी होने पर यदि ताजे करेले का रस का सुबह–शाम लेने से बीमारी दूर हो जाती है। पेट में कीड़े या कृमि की समस्या में करेले का रस या सब्जी का सेवन करने से तकलीफ कम होती है। दमा, सर्दी, खांसी होने पर करेले का और तुलसी के पत्तों का रस साथ में लेकर उसमें शहद मिलाकर महिना भर लेने से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती और इन समस्याओं से राहत मिलती हैं। करेला काफी शक्तिदायक होता है इसलिए इसके रस को बच्चों के खाने में शामिल जरूर करना चाहिए। एक्जिमा, चकत्ते, कुष्ठ, सोरायसिस, घाव और छाले जैसी त्वचा के विभिन्न रोगों पर इसका अच्छा उपयोग होता है।

अगर उल्टीयां या दस्त लगने पर करेले के रस में थोड़ा पानी मिलाकर इसमें काला नमक मिलाकर सेवन करने से तुरंत राहत मिलती है। भोजन में करेले की सब्जी खाने से पाचन अच्छा होता है। अपचन होने की स्थिति में करेले का रस लेना चाहिए।

लकवाग्रस्त रोगियों के लिए कच्चा करेला फायदेमंद साबित होता है। दमे से पीड़ित लोग बिना मसाले की करेले की सब्जी खाना काफी फायदेमंद होता है। पत्थरी के मरिजों के लिए करेला काफी उपयोगी है। करेले का सेवन करने से मूत्र की कंकड फूटकर वे मूत्र मार्ग से बाहर निकल सकते हैं।

युवाओं के लिए करेला महत्वपूर्ण साबित हुआ है। करेले में एंटीइंफ्लेमेटरी गुण होते हैं जो त्वचा से हानिकारक तत्वों को दूर करते हैं। इसी कारण किशोर अवस्था के मुहांसे या फुन्सियों की समस्या दूर होती है। दस्त और पेट दर्द से बचाव के लिए करेले का नियंत्रित उपयोग करना चाहिए। गर्भवती महिलाओं को करेले का सेवन करने से बचना चाहिए क्योंकि इसके कारण गर्भाशय संकुचित होता है।

केरेले का नियमित रूप से सेवन करने से दमा और ब्रोंकाइटिस जैसी गंभीर श्वसन बीमारियों को दूर किया जा सकता है। कैंसर से मुकाबला करेला काफी असरदार है। अब तक किए गये कई शोधों मे यह देखा गया कि करेला कैंसर रोग की कोशिकाओं से लड़ने में शरीर को मदद करता है।

।।संत वचन।।

हम मनुष्य भगवान को समझने में सक्षम है, क्योंकि ईश्वर स्वयं चाहता है की हम सभी को सच में सच्चाई पता होनी चाहिए और यह सिर्फ मनुष्य जन्म में ही संभव है। परंतु उसके लिए मन में भावना, दृढता और इच्छा का निर्माण होना चाहिए। बहुत अच्छा खाना पकाने पर भी अगर उसमें नमक मिलाना रह जाए तो उसका क्या फायदा? आपने भजन और पूजन तो बहुत अच्छा किया, पर अगर आपके इरादे नेक नही हैं तो, उसे अच्छा कैसे कहा जा सकता है.........?

व्हाट्स एप मंच

अच्छा स्वभाव गणित के शून्य के समान होता है। यह जिसके साथ होता है उसका मूल्य हमेशा अधिक होता है।

टमाटरः रोग और कीट नियंत्रण

डॉ. राणी जाधव, सहायक प्राध्यापक (अन्न प्रक्रिया विभाग),
अन्नतंत्रज्ञान महाविद्यालय, अमरावती

टमाटर की फसल लगाते समय फसल पर आने वाली बीमारियों और कीटों से सुरक्षा की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी पूरी करना आवश्यक होता है। अन्यथा उत्पादन घटने की संभावना होती है। किसानों को यह जानकारी होना काफी जरूरी होता है।

फफूंदीय रोगः पौधों का गल कर गिर जाना और मरना (डेपिंग ऑफ): "पिथियम"(च्लजीपनउ) नाम की फफूंद के कारण यह रोग होता है। जिसके कारण क्यारियों में लगे पौधों का जमीन से लगा हुआ भाग सडने लगता है और पौधें कमजोर पड कर सूख जाते हैं। **उपाय योजना** : पौधे की क्यारियां लगाने से पहले फौरमेलिन रसायन द्रव से जीवाणुरहित करना चाहिए। साथ ही बीजों को जर्मिनेटर और प्रोटेंक्टेंट से प्रक्रिया करना चाहिए। जर्मिनेटर का ड्रेंचिंग करना चाहिए। जमीन से पानी की निकासी होना आवश्यक है। इसके नियंत्रण के लिए 10 लीटर पानी में पांच मि. ली. इमिडेक्लोप्रिड (17. 8 एस एल) +मैन्कोजेब 20 ग्राम मिलाकर इस मिश्रण में पौधों को10 मिनट तक डुबो कर रखने के बाद रोपण करना चाहिए।

करपा (अर्ली ब्लाइट): यह बीमारी "अल्टरनेरिया सोलनी" (Alterneria Solani) नामक फफूंद के कारण होती है। जमीन के पास की पत्तियों से रोग की शुरुवात होती है. पहले पत्तियां पीली पडती हैं। पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बें दिखने लगते हैं। नम और गर्म हवा में इस रोग का प्रसार बहुत तेजी से होता है। इसके नियंत्रण के लिए मैन्कोजेब 25 ग्राम या प्रोपिनेब 15 ग्राम 10 लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करना चाहिए।

मर रोग (फ्यूजेरियम विल्ट): यह रोग जमीन में मौजूद "फ्यूजेरियम" (Fusarium oxysporum) नामक फफूंद के कारण होता है। पौधे की निचली पत्तियाँ पीली होकर गिर जाती हैं और पौधे की वृद्धि रुक जाती हैं। **हलः** बुवाई से पहले या इसे रोपण से पहले बीजों पर प्रक्रिया करना चाहिए। यह रोग मिट्टी में मौजूद फफूंद के कारण होता है इसलिए अंतर–फसलों में बदलाव करते समय रोग प्रतिरोधक किस्मों का चयन करना चाहिए।

वायरल रोगः लीफ कर्ल : पत्तियां झुर्रीदार हो जाती हैं और उनकी वृद्धि रुक जाती है और उनका रंग हल्का हरा दिखने लगता है। वृद्धि की शुरुवात में यह रोग होने पर फल धारण नहीं हो पाते हैं। इस बीमारी का प्रसार सफेद मक्खियों के कारण होता है। इसके नियंत्रण के लिए रोगग्रस्त पौधे नजर आते ही उन्हें उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। रोग का प्रसार सफेद मक्खियों के माध्यम से होने के कारण उसके नियंत्रण के लिए डाइमेथोएट या मिथाइल पैराथियान इन कीटनाशकों का छिड़काव करना चाहिए।

भूराः यह रोग पत्तियों और फूलों पर होता है। इस बीमारी में सफेद आटे की तरह फफूंद पत्तीयों की सतह पर और नीचे की तरफ नजर आती है। उपायः रोग नजर आते ही पानी में घुलनशील गंधक (0.25 प्रतिशत)10 लीटर पानी में 25 ग्राम इस मात्रा में 10 दिनों के अंतराल पर दो से तीन बार छिड़काव करना चाहिए ।

कीटः फल कुरेदने वाली इल्ली (हेलियोथिसअर्मिजरा) – मादा कीट पत्तियों, फूलों पर अंडे देती हैं। अंडों में से इल्लियां निकलने के बाद कोमल पत्तियां खाकर बढ़ती हैं। जनवरी से मई तक इस इल्लीयों का प्रकोप अधिक होता है। परोपजीवी कीटों में ट्राइकोग्रामा और कीड़ों मेंकॉम्पोलेटिस क्लोरोडी नाम के कीट हैं। ट्राइकोग्रामा कीट फलों को खोखला करने वाली इल्लीयों के अंडों से आजीविका चलाते है और कॉम्पोलेटिस कीट के परिसर फलों को खोखला करने वाली इल्लीयों को खाकर गुजारा करते हैं। मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से इन कीटों के नियंत्रण के लिए जैविक उपायों को अपनाना चाहिए। परंतु प्रकोप अधिक होने पर 15 मि.ली. नोवेलिरोन (10 प्रतिशत इसी) या क्लोरीन ट्रानिलिप्रोल (18. 5 प्रतिशत इसी) को प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

(आगे का लेख पृष्ठ 15 पर)

सूरजमुखी रोगों का नियंत्रण

प्रा. रुपेशकुमार जगन्नाथ चौधरी, (वनस्पती रोग विज्ञान विभाग),
केवलरामजी हरडे कृषि महाविद्यालय, चामोर्शी, जिला – गडचिरौली, मो. 9403241684

भारत में उगाई जाने वाली तिलहन की फसलों में सूरजमुखी काफी महत्वपूर्ण फसलों में से एक है। सूरजमुखी के तेल में मोनोअनसैचुरेटेड और पॉलीअनसेचुरेटेड एसिड होने के कारण रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करने में मदद करता है। इसलिए यह तेल हृदय रोग के रोगियों के लिए बेहद फायदेमंद है। सूरजमुखी तेल के उत्पादन में वृद्धि के लिए फसलों पर आने वाले कीटों और रोगों का प्रबंधन आवश्यक है।

सूरजमुखी पर होने वाले महत्वपूर्ण रोग:

1) करपा रोग: यह एक फफूंद मय रोग है। जो कि मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में दिखाई देता है। यह रोग"अल्टरनेररिया हेलिएंथी" (Alternaria helianthi) नाम की फफूंद के कारण होता है और इस फफूंद के बीज और फसल अवशेषों पर मिट्टी में मौजूद होते हैं और यहां से संक्रमण प्रसारित होता है। रोग का द्वितीयक प्रसार हवा के माध्यम से होता है। खरीफ के मौसम में ज्यादातर बादल छाए रहते है और कभी–कभी वर्षा, कम तापमान और अत्यधिक आर्द्रता इन सब के कारण यह रोग को अधिक बल मिलता है। इस रोग के प्रारंभिक लक्षण जमीन के पास वाले पत्तों पर बुवाई के 30–40 दिनों के बाद छोटे वृत्ताकार लाल धब्बे दिखाई देने लगते हैं। आगे जाकर यह धब्बे मिलकर काले बडे धब्बों के स्वरुप में नजर आते हैं। पौष्टिक वातावरण में रोग पौधे की जड़ों, पत्तियों और सूरजमुखी के फूलो की पिछली सतह पर लंबे धब्बों के रुप में नजर आता है। इस वजह से रोगग्रस्त पत्तियां सुख जाती हैं और परिणाम स्वरुप पौधों की भोजन तैयार करने की क्षमता घटकर उत्पादन में कमी आती है।

2) केवड़ा रोग: यह एक फफूंदीय रोग है जो प्लास्मापेरा हेल्स्टेडी इस फफूंद के कारण होता है। रोग के बीज फसल के बीजों द्वारा और मिट्टी में मौजूद सुप्त बीजों द्वारा प्रसारित होता है।

इस बीमारी के प्रमुख लक्षण के तहत पौधों की उंचाई नहीं बढ़ती हैं। पेड़ सडने लगता है। रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियां पीली हो जाती हैं और आर्द्रता अधिक होने पर पत्ती के पीछे सफेद फफूंद का विकास नजर आता है। रोग ग्रस्त पौधों के फूलों में बीज धारण संभव नही हो पाता है और अगर धारण हुआ भी तो बीज हलके और कमजोर रहते हैं जिससे उपज में गिरावट आती है।

3) तांबेरा रोग: यह हवा द्वारा प्रसारित होने वाला फफूंदीय रोग है। इस बीमारी का संक्रमण मुख्य रूप से पुकिनिया हेलियंथी नामक फफूंद के कारण रब्बी के मौसम में जब फसल 70–75 दिनो की होने पर होता है। पत्तियों के तल पर नारंगी/भूरे रंग की फुंसिया दिखाई देती हैं और कुछ समय पश्चात वे काले रंग के धब्बे हो जाते हैं। रोग का प्रकोप अधिक होने पर पत्तों के दोनो तरफ यह धब्बे फैले हुए रहते हैं। इस रोग के कारण पत्तियां जल जाती हैं, गल कर गिर जाती हैं और बीज नही भर पाते हैं।

भूरा रोग: यह रोग एरीसिफे सिचोरेसिरम नामक फफूंद के कारण होता है। पत्तियों पर और साथ ही पुराने तनों पर सफेद–भूरे रंग की फफूंद नजर आती है।

(आगे का लेख पृष्ठ 15 पर)

हमारी सामाजिक प्रतिबद्धता.......

किसान सभा, अंजनवटी,
तालुका एवं जिला – बीड

उत्पाद प्रत्यक्षिक प्रदर्शन, बोरी,
तालुका – जुन्नर, जिला – पुणे

मृदा परीक्षण कार्यक्रम, निलज,
तालुका – जिला – गोंदिया

किसान सभा, चांदौली,
तालुका– साकोली, जिला – भंडारा

किसान सभा, शेंदुरजना आढाव,
तालुका– मानोरा, जिला– वाशिम

किसान सभा, वाई,
तालुका / जिला – यवतमाल

कृषि मेला और रबी फसल संगोष्ठी,
नांदूरी, तालुका – तुळजापुर,
जिला – उस्मानाबाद

मृदा परीक्षण दिवस, साबा,
तालुका और जिला – परभणी

किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम,
जिला–अकोला

किसान सभा, वारंगा, तालुका
और जिला – नागपूर

मृदा परीक्षण दिवस, करमाले,
तालुका – अलीबाग, जिला – रायगढ़

किसान सभा, वासगांव,
तालुका – डहाणु, जिला –पालघर

पौराणिक फूलों की जानकारी और पहचान

प्रा. अंकित सुनील खेड़ीकर (उद्यान विद्या विभाग),
सेवकभाऊ वाघाये पाटिल, कृषि महाविद्यालय केसलवाड़ा, जिला – भंडारा. मो. 7066644688

चमेली: दुनिया में चमेली की 200 प्रकार की नस्लें उपलब्ध हैं। हमारे यहां इसे मोगरा, जाई, जुई, चमेली, सायली, नवली ऐसे कई रूपों में जाना जाता है। ये सभी फूल ज्यादातर सफेद रंग के होते हैं और बेल पर उगते हैं। इनके उगने का मौसम वसंत और ग्रीष्म ऋतु में है। भारत के अलावा अन्य देशों में भी चमेली काफी महत्वपूर्ण फूल है। यह इंडोनेशिया का राष्ट्रीय फूल है और फिलीपींस में इसके हार देवताओं को पहनाए जाते हैं। थाईलैंड में चमेली को माँ का प्रतीक माना जाता है।

चाफा: वसंत ऋतु में खिलने वाले चाफा के फूल लंबी हरी पतीयों के बीच काफी आकर्षक होते हैं। काफी सारी जातियों वाले यह फूल मूल मेक्सिको, मध्य अमेरिका और वेनेजुएला में पाए जाते हैं। ज्यादातर सफेद रंग के यह फूल गहरे गुलाबी, हल्के पीले रंग में भी पाये जाते हैं। इन फूलों की रात में अधिक सुगंध होती है। इस कारण कुछ विशिष्ट कीट इनकी ओर आकर्षित होकर उनका परागण करते हैं। इनके पेडों की टहनिया लगाकर भी रोपण किया जा सकता है।

कैलासपती: मराठी में "कैलासापतिंक", तमिल में "नागलिगम", तेलगु में "मल्लिकार्जुन" और अंग्रेजी में, "कैननबॉल ट्री" के नाम से जाने जाते हैं। यह पेड़ कम ही देखने को मिलते हैं। कैलासपती के फूल बेहद विशिष्ट होते हैं। इस फूल के केंद्र में शिवलींग का आकार होता है और उसके चारो ओर बहुत महीन रेखाएं समाई होती हैं। इसकी सुगंध भी काफी आकर्षक होती है।

सुरंगी: हार और गजरों के लिए इन फूलों का उपयोग किया जाता है। हल्के पीले चॉकलेटी रंग के यह फूल काफी सुगंधित होते है। फूल की कलियाँ लाल रंग की और गोल आकार की होती हैं। पंखुड़ी बहुत बड़ी और गोल आकार की होती हैं। इन फूलों की खुशबू इतनी तेज होती है कि लगभग आधा किलोमीटर दूर से भी इन फूलों की सुगंध आपको लुभाती है। नेट पर इन फूलों से संबंधित काफी कम जानकारी उपलब्ध है साथ ही इनकी तस्वीरें भी कम देखने को मिलती हैं।

केतकी: केवड़ा के फूलों का काफी प्राचीन काल से पुराणों में उल्लेख है। इसकी खुशबू बहुत आकर्षक होने के कारण इसका उपयोग इत्र और सुगंधित तेल बनाने में किया जाता है।

गुंजा: इन गुलाबी फूलों के लाल–काले बीजों का उपयोग आभूषण बनाने में किया जाता हैं। इनके बीज खट्टे और जहरीले होते हैं। उचित प्रकार से सेवन करने पर इन के औषधीय गुणों से लाभ हो सकता है। सिर में होने वाली जूओं को मारने के लिए भी गुन्जों का उपयोग किया जाता है।

नागकेसर: नागकेसर का मूल उत्पत्ति स्थान श्रीलंका है। वहां के चौथे दापुला राजाद्वारा विकसित किए गए 96 हेक्टेयर के विस्तार वाले जंगलों में मुख्य रूप से नागकेसर की खेती लगाई थी। आज भी यह प्राकृतिक जंगल मौजूद है। हमारे इशान भाग में और पश्चिमी घाट में ऊंचाई पर यह पौधे पाये जाते हैं। फूल सफेद रंग के होते हैं पंखुड़ियों के केंद्र में पीले केसर रंग के दाने होते हैं. इस फूल से बहुत अच्छी महक आती है। पेड़ की लकड़ी गहरे नारंगी रंग की होती है। यह काफी मजबूत और वजनदार होती है। पूर्वी रेलवे में स्लीपरों के रूप में इनका उपयोग किया जाता था।

टमाटर: रोग और कीट नियंत्रण ...
(पेज 10 से जारी)

नाग इल्ली (लीफ माइनर): इस कीट की इल्लीयां पत्ती तह में घुसकर मध्य का हरा भाग खाती हैं। जिस से पत्तियां सफेद पडने लगती हैं। इस कारण पत्तियों की खाद्य बनाने की प्रक्रिया पर अवांछनीय परिणाम होते हैं। इस कारण इस इल्ली का प्रकोप नजर आते ही पांच प्रतिशत कडवे नीम के अर्क का छिड़काव करना चाहिए।

टीड्डे, सफेद मक्खियां और मावा: यह कीट पत्तों के अंदर का अन्नरस चूस लेते हैं और जीवाणु रोगों के प्रकोप का कारण बनते हैं। इनके नियंत्रण के लिए 15 मि.ली. डायमिथोएट 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

सूरजमुखी रोगों का नियंत्रण.....
(पेज11 से जारी)

4) तनामरया नेक्रोसिस बीमारी: यह एक वायरल रोग है. यह रोग सूरजमुखी की पत्तियों पर नजर आता है। यह रोग मुख्य रूप से फूल कीटों के माध्यम से फैलता है। इस बीमारी का प्रमुख लक्षण पौधों की रोप अवस्था उसके तने के पास की पत्तियों पर काले और और गोल आकार के धब्बे दिखाई देते हैं। पत्तियां मुडने लगती हैं। उपरोक्त महत्वपूर्ण रोगों को नियंत्रित करने के लिए निम्न लिखित उपाय प्रक्रिया करने से अच्छी तरह से रोग–प्रबंधन किया जा सकता है।

➤ खेत में से कचरा–कंकड एकत्रित कर बांध कर साफ सुथरे रखें। ➤ करपा रोग के नियंत्रण के लिए बुवाई से पहले प्रति एक किलोग्राम बीज मात्रा को तीन ग्राम थाइरम या दो ग्राम कार्बन्डैजिम से मलकर बीज प्रसंस्करण करना चाहिए या रोग नियंत्रण के लिए मैन्कोजेब 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर छीड़काव करना चाहिए। ➤ केवडा रोग नियंत्रण के लिए मेटेलेक्जिल, इस फफूंदनाशक को तीन मि.ली. प्रति एक लीटर पानी में मिलाकर छिडकांव करना चाहिए। ➤ तांबेरा रोग नियंत्रण के लिए जहां तक हो सके बुवाई करने के लिए संकरीत नस्ल का उपयोग करें, या फिर मैन्कोजेब अथवा झायनेब इनका छिड़काव करना चाहिए। ➤ नेक्रोसिस/तनामर रोग के नियंत्रण हेतु रोग फैलाने वाले कीटों का नियंत्रण करना चाहिए। साथ ही बुवाई से पहले पांच ग्राम इमिडाक्लोप्रिड प्रति किलोग्राम बीज के साथ मल कर बीज प्रसंस्करण करना चाहिए। ➤ भूरी रोग के नियंत्रण के लिए डीफेनोकोनाजोल (25 इसी) एक मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर शुरुवात के दिनों में छिडकांव करना चाहिए।

जीवन के किसी भी दिन को दोष ना दे ... क्योंकि बढ़िया दिन यादें देते हैं, अच्छे दिन खुशियां देते हैं, बुरे दिन हमें अनुभव और सबक देते हैं ...!

सूरन रोपण तकनीक

संजुला विलास भावर, वैभव गणेशराव लाजुरकर
उद्यान विद्या विभाग, डॉ. प. दे. कृषि विद्यापीठ अकोला, मो. 8600344097

आजकल सूरन इस कंद की फसल अधिक उत्पादन क्षमता और पकाने के लिए योग्य गुणों के कारण व्यापक लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। भारत में आंध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, केरल, बिहार और उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में प्रमुख रूप से इसका उत्पादन लिया जाता है। सूरन में मुख्य रूप से प्रोटीन और मैदामय पदार्थ (स्टार्च) पाए जाते हैं। साथ ही इसमें औषधीय गुण भी पाए जाते हैं। यह मुख्य रूप से बवासीर, दस्त के लिए, दमा, फेफड़ों में आने वाली सूजन, रक्त को शुद्ध करने और उल्टी आदि रोगों के लिए सूरन बहुत उपयोगी है। सूरन में मुख्य रूप से कैल्शियम, फास्फोरस और विटामिन ए, सी और ई आदि तत्व पाए जाते हैं। सूरन अत्याधिक पौष्टीक होती है। इस कंद में फ्लेवोनाइड्स और टैनिन जैसे कई स्वस्थ वर्धक तत्व समाविष्ट होते हैं। सूरन की फसल हल्दी, नारियल, केला इन प्रमुख फसलों में अंतर–फसल के रुप में भी लगाई जाती है।

सूरन उष्ण कटिबंध की एक कंद जातिय फसल है। इसकी लगभग 80–90 प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें से बहुत कम खाने लायक होती हैं। सूरन का उगम स्त्रोत भारत या श्रीलंका माना जाता है।

मौसम: सूरन के उत्पादन के लिए 25–30 डिग्री से. तापमान के साथ–साथ आर्द्रता और 80–90 प्रतिशत वायुमंडलीय आर्द्रता अच्छी मानी जाती है। गर्म और नमी वाला मौसम शुरुवाती वृद्धि के लिए आवश्यकता होता है बाद में, कंद की बेहतर वृद्धि के लिए सूखा मौसम आवश्यक होता है। सामान्य रूप से 1000–1500 मि.मी. वर्षा कंद के अच्छे विकास के लिए योग्य होती है।

भूमि: सूरन इस फसल की मध्यम से हल्की जमीन में बढिया उपज मिलती है। अधिक जैविक पदार्थ और भुर–भुरी जमीन कंद की वृद्धि के लिए उपयोगी होती है। पानी की योग्य निकासी ना होने पर कंद सड़ जाते हैं।

संवर्धन: फसल की कटाई के तीन से चार महीने तक कंद सुप्त अवस्था में जाते हैं। इसलिए कंद का रोपण और कटाई एक निश्चित अवधि में करनी पडती है। सूरन की बुवाई कंद (धन कंद) के द्वारा की जाती है। मातृ कंद के बगल में आने वाले छोटे कंद रोपण के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। कंद को थायो यूरिया, इथ्रेल आदि से प्रक्रिया करने से सुप्त अवस्था की अवधि कम होकर कंद में अंकुरण जल्दी होता है।

जाति: गजेंद्र, श्रीपद्मा, श्री अथिरा (संकरीत), कुसुम, नरेंद्र, आशा यह अधिक उपज देने वाली नस्लें हैं।

खेती करने योग्य कंदों का आकार (वजन): बुवाई के लिए उपयोग में लिए जाने वाल कंदो का आकार यह अंत में फसल निकालते समय उपलब्ध होने वाले कंद के आकार को प्रभावित करता है। जितना बड़ा कंद बुवाई के लिए इस्तेमाल किया जाता है उतना ही बड़ा कंद कटाई के समय तैयार होकर मिलता है।

रोपण पूर्व प्रक्रिया: यदि बुवाई के लिए कंद कम मात्रा में उपलब्ध हैं तो ऐसे समय में कंदों को काटकर लगाया जाता हैं। यदि कंदों को काटकर लगाया जा रहा है तो कंद सडे ना और अच्छा अंकुरण हो इसके लिए कंदो के प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है, बीज बोने से पहले बीज

प्रक्रिया करना चाहिए, इसके लिए गोबर की स्लरी + मैंकोझेब (0.2 प्रतिशत) +मोनोक्रोटोफोस (0.05 प्रतिशत) इस मिश्रण में कंदों को 5–10मिनट तक डुबो कर रखना चाहिए और बाद में उन्हें 24घंटे के लिए छाया में सूखा कर बुवाई करना चाहिए।

बुवाई: जमीन की 20–25 से.मी. गहराई तक दो से तीन बार जुताई कर मिट्टी को महीन और भुर–भुरी कर जमीन समतल करनी चाहिए। समतल क्यारियों की तुलना में गड्ढे बनाकर बुवाई करने से अधिक उपज प्राप्त होती है। दो कंदों के बीच का अंतर कंद के आकार के अनुसार रखा जाता है। यदि कंद एक किलो से अधिक वजन का है तो बीच का अंतर 90 से.मी. X 90 से.मी. इतना रखना चाहिए।

बुवाई का मौसम: वर्षा ऋतु से पहले या वर्षा शुरु होते ही मई से जून महिने में बुवाई करना चाहिए। पूर्वी भारत में फरवरी से मार्च इन महीनों के दौरान बुवाई करी जाती है, परंतु इन दिनों में सिंचाई की व्यवस्था करनी पडती है।

उर्वरक प्रबंधन: सूरन एक जैविक फसल है और रासायनिक उर्वरकों अच्छे परिणाम देती है। बुवाई से पहले छह टन गोबर खाद, **सूफला 15:15:15 – 293** किलो, **म्युरेट ऑफ पोटाश (एमओपी)** – 27 किलो, **बेंटोनाइट सल्फर** – 10 किलो साथ ही बुवाई के 50 दिनों बाद **उज्ज्वला यूरिया** – 104 किलो प्रति एकड इस प्रकार से खाद प्रबंधन करना चाहिए।

जल प्रबंधन: यदि ग्रीष्म ऋतु में फसल लेनी है तो बुवाई के तुरंत बाद सिंचाई करनी पडती है उसके बाद फिर सात से आठ दिनों के अंतराल पर पानी देना चाहिए। मानसून के दौरान फसल लगाने पर पानी देने की आवश्यकता नहीं होती है परंतु काफी दिनो तक बारिश नहीं होने पर सिंचाई करनी पडती है।

कीट और रोग: 1) चूर्णी खटमल इस खटमल का मुख्य रूप से कंदों की जड़ों पर प्रकोप होता हैं और कभी–कभी तनों और पत्तीयों पर भी नजर आते हैं। इनका प्रकोप ज्यादातर कंद कटाई पर नजर आता है। प्रभावित कंद सिकुड जाते हैं और यदि इन कंदों का उपयोग बुवाई के लिए किया जाता हैं तो इनमें अंकुरण नही हो पाता हैं। इस कीट के नियंत्रण के लिए कीट रहित कंदों द्वारा बुवाई करना चाहिए। बुवाई करते समय कंदों का बीज प्रसंस्करण कर उपयोग करना चाहिए।

2) सूत्र कृमि: यह कीट कंद और जड़ों में पाये जाते हैं। इसका प्रकोप फसल वृद्धि की शुरुवात की अवधि में देखने को मिलता है। इसके नियंत्रण के लिए सूत्र कृमि रहित कंदों का प्रयोग करना चाहिए। बुवाई के समय अरंडी या कडवे नीम की खली एक टन प्रति एकड डालने से सूत्र कृमि का प्रभाव कम होता है। कार्बोफ्यूरान 5 ग्राम प्रति पेड़ डालने से सूत्र कृमि का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है।

3) पत्तियों पर धब्बे: शुरुवात की अवधि में पत्तियों पर लाल–काले गोलाकार धब्बें नजर आते हैं। इनके नियंत्रण के लिए, कप्तान 0.2 प्रतिशत या मैन्कोजेब 0.25 प्रतिशत का हर 15–दिन के अंतराल पर 2–3 छिडकाव करना चाहिए।

कटाई: सूरन छह से सात महीने की अवधि वाली फसल है। पत्ते पीले पडने या पेड़ के नीचे झुकने से समझा जाना चाहिए कि फसल कटाई योग्य हो गई है। सामान्य रुप से कटाई नवंबर माह में की जाती है। जब बाजार में मांग बहुत अधिक होती है तब कटाई जल्द भी की जाती है इसके विपरीत, यदि बाजार में मांग नहीं है, तो भी कंदों को बिना कटाई के पूरे वर्ष भर मिट्टी में रखा जा सकता है, सिर्फ उन्हें चूहों से बचा कर रखना पडता है। आमतौर पर प्रति हेक्टेयर 20–50 टन उत्पादन प्राप्त होता है। लेकिन उपज मुख्यतः बुवाई के लिए प्रयोग किए गए कंदों के आकार और फसल प्रबंधन पर निर्भर करती है।

आधुनिक पद्धति से विदेशी सब्जी और फल उत्पादन

श्री. मकरंद चुरी, उपाध्यक्ष, उत्तर कोंकण चौंबर ऑफ कॉमर्स एंड एग्रीकल्चर,निसर्ग निर्माण एग्रो प्रा. लि., माटुंगा, मुंबई, मो. 9821112102

वैश्वीकरण के कारण आज दुनिया बेहद करीब आ गई है। दुनिया के किसी भी देश में बनाए गए उत्पाद हमे आसान से उपलब्ध हो रहे हैं। विदेशी पर्यटकों को उनके देश में मिलने वाले खाद्य पदार्थ यहां मिल सके ऐसी उम्मीद होती है। जहां इस प्रकार के पदार्थ उपलब्ध होते हैं विदेशी पर्यटक उन होटलों में या उद्यमियों के पास जाना पसंद करते हैं। ऐसे पर्यटकों के कारण भारतीय लोग भी नए–नए खाद्य पदार्थों को पहचानने लगे हैं।

सिर्फ बड़े शहरों में ही नही बल्कि छोटे शहरों में भी अब मॉल्स बनने लगे हैं। अन्य विदेशी वस्तुओं के बराबरी में इन मॉल्स में विदेशी सब्जियां और फल मिलने लगे हैं। हमारे यहां काफी होटलों और रेस्तरां में भी विदेशी सब्जीयों तथा फलों से बने पकवान मिलने लगे हैं।

विदेशी कही जाने वाली यह सभी सब्जियां पहले आयात की जाती थीं। जलवायु की दृष्टि से देखा जाए तो हमारे देश में काफी विविधता है। ऐसी भौगोलिक विविधता लाभांवित देश पुरी दुनिया में कोई और नही होगा यह कहा जाए तो गलत नही होगा। उसमें भी महाराष्ट्र भारत के मध्य में स्थित होने के कारण सबसे बढिया मौसम से लाभांवित है। इसे एक प्राकृतिक ग्रीनहाउस कहा जाना भी गलत नही है। यहां तो बहुत सारी देशी और विदेशी सब्जियां पूरे वर्ष भर उगाई जा सकती हैं। यहां के कई खेतों में तो खुली जमीन में क्यारियां बनाकर विभिन्न प्रकार की सब्जियां उगाई जा सकती हैं। इस प्रकार की खेती के लिए, आमतौर पर ड्रिप या स्प्रिंकलर प्रणाली से सिंचाई की जाती है। कुछ सब्जियां को उगाने के लिए विशिष्ट तकनीक की जरूरत होती है। इसके लिए, निम्नलिखित तरीकों से फसलें लगाई जाती हैं।

- नेट टनेल बनाकर भी विदेशी सब्जियों की खेती की जा सकती है। उंचे नेट हाउस बनाकर यदि विदेशी सब्जियां लगाई तो बहुत अच्छी गुणवत्ता वाली और लाभदायक उपज प्राप्त की जा सकती है। लेकिन यदि वर्षा ऋतु में अधिक वर्षा होती है तो इस विधि से उत्पन्न नहीं लिया जा सकता है। बहुत ज्यादा बारिश होने पर नेट को निकाल कर रखना पडता है।
- कुछ विदेशी सब्जियों के लिए पॉली हाउस (ग्रीन हाउस) बनाने पडते हैं। इन ग्रीनहाउस में एक तरफ पंखा रखा जाता है जो हवा बाहर की ओर फेकता है और दूसरी तरफ एक पैड होता है जिस पानी छोड़ा जाता है या फिर स्प्रिंकलर और फॉगर्स लगाये जाते हैं। इस तरीके से फसल के विकास के लिए आवश्यक ठंडापन पॉलीहाउस में बनाए रखना संभव होता है। कुछ जगहों पर इसका नियंत्रण कंप्यूटर द्वारा भी किया जाता है। आम तौर पर रंगीन शिमला मिर्च, ब्रोकोली और कई प्रकार के लेट्युस की फसल पॉलीहाउस में लगाई जाती हैं। कुछ स्थानों पर कोकोपिट को जमीन के रुप में या कोकोपीट और मिट्टी

का मिश्रण बनाकर उपयोग में लिया जाता है। पॉलीहाउस खडा करने के लिए शुरु में काफी बड़ा खर्च करना पडता है. लेकिन उससे लंबे समय तक मिलने वाली आय को ध्यान में रखा जाए, तो यह लागत बहुत बड़ी नही मानी जा सकती है।

नेट हाउस या पॉलीहाउस में रोगों और कीटों का बहुत ज्यादा प्रकोप नहीं होता हैं। इसलिए सहज रूप से यहां कीटनाशकों की विशेष आवश्यकता नही होती है। कीटनाशकों और उर्वरकों आदि के सीमित उपयोग के कारण फसल संबंधित काम कम समय में पूर किये जा सकते है।

विदेशी सब्जियों की खेती करते समय जमीन का सामू जांचना महत्वपूर्ण होता है। मृदा निरीक्षण करने से जमीन का सामू और साथ में जमीन में मौजूद तत्वों की जानकारी भी प्राप्त होती है, जिससे जमीन में फसल के लिए आवश्यक जिन तत्वों की कमी हैं उन्हें खाद के रूप में दिया जा सकता है। आवश्यक तत्व उचित मात्रा में मिलने से उपज अच्छी प्राप्त होती है।

मिट्टी को माध्यम के रुप मे उपयोग ना करते हुए भी विदेशी सब्जीयों की फसल उगाई जा सकती है। इस तरह की खेती को 'हाइड्रोपोनिक्स सिस्टम' कहा जाता है। इस प्रकार की खेती को एक तरह से उपज का कारखाना कहा जा सकता है। ऊपर बताए गए कृषि प्रकार से खेती करने पर 25 प्रतिशत कम समय में उत्पादन प्राप्त होता है। इस कारण साल भर में काफी अधिक फसलें उगाई जा सकती है। साथ ही मिलने वाली सब्जियों की गुणवत्ता भी बहुत अच्छी होती हैं। परंतु इस प्रकार की खेती में बहुत अधिक शुरुवाती निवेश करना पडता है।

विदेशी सब्जीयों की किस्मों में, ॲस्परॅगस, बेबी कॉर्न, ब्रोकोली, रेड कैबेज, लाल और पीली शिमला मिर्च, स्वीट कॉर्न, फेनेल, बेझील विभिन्न प्रकार के 7 से 8 हर्ब्स, लीक्स, आइसबर्ग और 10 से 12 प्रकार के लेट्यूस, बटनमशरूम, पार्सली, स्नो पीज, चेरी टमाटर, हरी और पिली झुकीनी और ऐसी लगभग 60 से ज्यादा सब्जियां और 10 से ज्यादा फलों की किस्में आज हमारे भारत में विभिन्न स्थानों पर उगाई जाती हैं जिन्हें पहले आयात किया जाता था।

भूमि का अभाव और जमीन में पहले से लगाई फसलों के कारण खाली जमीन की थोड़ा अभाव है। जहां भी खाली जमीन उपलब्ध है वहां यह खेती संभव है। उत्पादों की गुणवत्ता और निरंतरता बनाए रखने के लिए इन सभी सब्जियों की खेती लगातार और नियमित रूप से करनी पडती है। जिस से की साल के अधिकतम महीनों में उत्पादन लेकर आपूर्ति की जा सकती है। चूंकि इन सब्जियों को मुख्य रूप से बड़े और सितारा होटलों में पहुंचाया जाता है और उनके मेन्यु पर यह खाद्य पदार्थ वर्ष भर दिए जाते हैं, इसलिए उन्हें पूरे साल भर आपूर्ति हो सके यह सुनिश्चित करना आवश्यक होता है। साथ ही आपूर्ति की दरें और सभी शर्तों का पालन करना जरूरी होता है।

इन सभी सब्जियों की फसलों को पकाने के लिए अलग–अलग तकनीकें हैं। कुछ सब्जियां एक बार लगाने के बाद एक निश्चित समय पर कटाई करनी पडती है तो कुछ सब्जियों के पौधे अगले कुछ महीनों तक उत्पादन देते हैं। अगर योग्य तरीके और सावधानी से काम किया जाए तो बहुत अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है।

आज तक हम परंपरागत पद्धति से खेती कर रहे हैं। विदेशी सब्जियों की खेती के लिए प्रारंभिक लागत काफी अधिक होने के बावजूद अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए बड़ा निवेश करना जरूरी होता है। इस फसल के उत्पादों को अच्छे भाव मिलते है। देशी सब्जियों की तुलना में यह दर दो से पांच गुना ज्यादा हो सकती है। बाजार में मांग को देखते हुए सब्जियों का चयन करने पर अच्छे पैसे कमाये जा सकते हैं। काफी लोगो ने सिर्फ एक प्रकार का उत्पादन लेने की बजाय, विक्रेताओं के मार्गदर्शन पर विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती करते हैं, अर्थात एक ही सब्जी का बहुत अधिक उत्पादन ना लेते हुए संतुलन बनाए रखना चाहिए। आज हमारे होटलों

में अच्छी गुणवत्ता वाली विदेशी सब्जियों की मांग बढ़ती ही जा रही है। साथ ही इन सब्जियों के निर्यात में भी काफी संभावनाएं हैं।

सब्जी की फसलों को पानी देने की पुरानी पद्धतीयां को आज बदलना जरुरी हो गया है। साधारण पद्धति से पानी देने के बाद में पानी सुखकर जमीन कडक हो जाती है। जमीन से फुटने वाले नए अंकुर भी आसानी से बाहर नहीं आ पाते हैं और फसल को दिया गया उर्वरक भी पानी के साथ बह जाता है। इस के बजाय ड्रिप या स्प्रिंकलर पद्धति द्वारा सिंचन कराया जाना चाहिए। इससे पानी की खपत भी कम होती है। जड़ों को जितना चाहिए बस उतना ही पानी मिलता है और मिट्टी में मौजूद आवश्यक तत्व भी बह कर नहीं जाते हैं। जमीन भुरभुरी रहने के कारण आने वाली फसल भी उत्कृष्ट आती है। सीमित पानी उपलब्ध होने के कारण खरपतवार भी नहीं उग पाती हैं और जुताई का खर्च भी कम हो जाता है।

प्रत्येक किसान को अपने खेत में केंचुओं के खाद का उत्पादन करना आवश्यक है। गोबर, घास फूस का उपयोग करके प्राकृतिक उर्वरक बनाये जा सकते हैं। खेत में गड्ढा बनाकर उस गड्ढे में कचरा इकठ्ठा कर खाद बनानी चाहिए. अलग–अलग जगहों पर पड़े कचरे में यदि फफूंद तैयार हो जाती है, तो यह फसल के लिए हानिकारक होती है। यह विदेशी सब्जियां और फल पहले हमारे यहां नहीं उगाते थे। इसका कारण शायद यह था कि किसी ने इसका प्रयत्न ही नहीं किया था। लेकिन हम दृढ़ता से मानते हैं कि आज की तारीख में कोई भी नया उत्पाद बेचा जा सकता है। सभी किसान एक ही सब्जी का उत्पादन ना लेते हुए, सामूहिक खेती के माध्यम से विभिन्न सब्जीयों का उत्पादन आपस में बाट कर खेती करने से अच्छा लाभ मिल सकता है। यदि उचित उत्पादन और प्रबंधन किया जाये तो अच्छी पैदावार मिलना निश्चित है।

किसानो को वर्तमान में की जा रही खेती के साथ कुछ नये उत्पादनों का प्रयास भी करते रहना चाहिए। यदि वे कुछ नया उत्पादन करने में सफल होते हैं तो उन्हें नए उत्पाद के उत्पादन का आनंद और उचित बिक्री व्यवस्था से अधिक आमदनी भी हो सकती है। आमतौर पर सभी किसान पारंपरिक खेती उत्पाद उगाते हैं और हर किसी का कहना होता है सब्जियों का सिर्फ एक बार उत्पादन लिया जा सकता है। लेकिन यह साबित हो गया है कि विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती साल भर उत्पादन दे सकती हैं, जिससे किसानो को अच्छी आमदनी भी हो सकती है।

अच्छी तरह से अध्ययन करके, बिक्री प्रणाली का अनुमान लेकर यदि उत्पादन किया गया तो विदेशी सब्जियों और फलों की खेती किसानों के लिए एक बेहतरीन अवसर है। आने वाले दशक खेती उत्पादकों के लिए लाभप्रद होने वाले हैं। खेती के क्षेत्र में भी अब नई तकनीकों का विकास प्रगति पर है। जिन्हें अपनाने से, इसमें कोई शक नहीं हैं कि उगाए जाने वाले उत्पादों को एक निश्चित बाजार मिलेगा । आज स्थिति यह है कि युवा वर्ग भी कृषि क्षेत्र के प्रति आकर्षित हो रहा है, क्योकि उन्हें यह समझ में आ गया है कि योग्य फसलों को उचित रिति से करनेऔर नई–नई फसलें लेने से निश्चित रूप से एक अच्छी पैदावार और आमदनी मिल सकती है।

अब आने वाले अगले न्यूनतम दस वर्ष खेती उत्पादन के हैं। विदेशी और घरेलू पर्यटक भी बढ़ने लगे हैं। खाने की आदतें बदल गई हैं और कुछ नया खाने की पसंद बढ़ने लगी है। लोगों की खरीदने की क्षमता बहुत बड़े पैमाने पर बढ़ रही है। परदेशी और घरेलू दोनो प्रकार के कृषि उत्पादों की मांग भी बढ़ रही है। कृषि क्षेत्र में रुचि रखने वाले और इस क्षेत्र को पसंद करने वाले युवकों के लिए यह निश्चित ही एक उज्जवल भविष्य वाला क्षेत्र है।

बीते कल की गलतियां और आने वाले कल के सपनों के मध्य में आज एक अवसर के रुप में उपलब्ध है!

अंगूर के फसल की सुरक्षा

अंगूर फसल पर इन दिनों में भौरों और पत्ते व फल खाने वाली इल्लियों का प्रकोप होता है। इस मौसम का कम तापमान और आर्द्रता उनके लिए काफी अनुकूल होती है। यह इल्ली (स्पोडोप्टेरा लिटुरा) फलों में छेद बनाकर नुकसान पहुंचाती हैं और फिर इन फलों पर फल मक्खियों का प्रकोप हो सकता है। इन इल्लीयों को एकत्रित कर उन्हें नष्ट करना यही एक बढ़िया उपाय है। रासायनिक विधि से नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट (5 एसजी) 0.22 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर शाम के छह बजे के बाद छिडकाव करना चाहिए।

उड़ने वाले भौरों के नियंत्रण के लिए मिट्टी में इस कीट की लार्वा अवस्था को नियंत्रित करने का प्रबंधन किया जाना चाहिए, उसके लिए प्रति 200लीटर पानी में "बिवेरिया बेसियाना+ मेटारायझियम एनिसोप्ली" दोनो की 1–1 लीटर मात्रा मिलाकर प्रति एकड़खेत में बेलों के जड़ों वाले क्षेत्र में डालकर नमी बनाए रखना चाहिए। साथ ही बाग और बांध पर लगी खरपतवार हटाकर बाग को साफ रखा जाना चाहिए। इस जैविक पद्धति से नियंत्रण नहीं होने पर इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एसएल) 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर जमीन में नमी बनाए रखना चाहिए।

मोबाइल कैसे इतना स्मार्ट बन गया है?

बहुत कुछ खाया है इस मोबाइल ने...
इसने हाथ की घड़ी को खाया...
टॉर्च की रोशनी को खाया ...
इसने चिठ्ठियां–पत्रों को खाया ...
रेडियो खाया, टेपरेकार्ड खाया ...
किताबों को खाया...
कैमरा और साथ में कैलकुलेटर भी खाया
इस मोबाइल ने दोस्ती को खाया ...
मेल–मिलाप खा लिए ...
पोते, नाते खा लिए ...
समय खाया ... स्वास्थ्य खाया ...
इतना सब खाकर यह होशियार बन गया है!
जिस समय तक यह तार से बंधा था, उस समय तक मनुष्य स्वतंत्र था।
अब मनुष्य फोन से बंध गया है ...
उंगलिया ही रिश्ते निभाती हैं! मिलने जुलने और बात करने के लिए किसी के पास समय नहीं है।
सभी "टच" करने में बिजी है, लेकिन टच में कोई भी नहीं है ...!

संग्राहकः लिलाधर महाजन,
वरिष्ठ मृदा परीक्षण सहायक, आरसीएफ लिमिटेड, मुंबई

विचार मंथन

हम में से कई लोगों के सामने एक प्रश्न हमेशा रहता है, कि जीवन का अर्थ क्या है? कुछ लोगोंके अनुसार जन्म से लेकर मृत्यु तक की अवधि का मतलब जीवन है! कुछ लोगों का कहना हैं कि दो सांसों के बीच का अंतर जीवन है!

मुझे भी यह प्रश्न कभी–कभी सताता रहता है। काफी विचार करने के बाद यह समझ में आया कि जीवन और मृत्यु के मध्य में सुखद और दुखद क्षणों के अनुभव का अर्थ जीवन है! जीवन जीते हुए हम कई अवसरों से गुजरते हैं। उनमे से कुछ अवसर संघर्षों, नैराश्य के तो कुछ आनंदमयी होते हैं। मनुष्यों से आप के संबंध जुड़ते हैं, टूटते हैं या फिर टूट जाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि मानव मन को कोई नहीं समझ सकता, परंतु फिर भी एक व्यक्ति की ईमानदारी, झूठापन, मन के स्वार्थी उद्देश्यों को पहचाना जा सकता है। प्रत्येक चरण पर जीवन हमें कुछ ना कुछ सिखाता हैं!

हम अपने खुद की ओर कर्म का अहं लेकर जीते हैं, इसलिए हम हमारे कर्म की सीमा से ज्यादा चिंता करते हैं। आपके कर्म का मुख्य उद्देश्य केवल कर्म पूर्ण करना नहीं है, बल्कि मन द्वारा कल्पित हमारी देह और बुद्धी की क्षमता के अनुसार हमारी उम्मीदों को पूर्ण करना होता है। धैर्य रखकर किसी स्थिति को सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर देखने से कभी–कभी अच्छे परिणाम भी मिलते हैं। इसके लिए अतीत को याद कर रोते बैठने की बजाय नये सपने देखने अच्छा होता है। दुनिया बदलने की प्रतिक्षा करने के बजाय खुद को बदलने की शुरूवात करना चाहिए।

इसके अलावा, मुझे लगता है कि उदर निर्वाह के लिए पैसा कमाने साथ अच्छी अभिरुचियां भी पालना चाहिए।छोटी– छोटी खुशियां देने वाली बाते भी आपके जीवन को सुंदर बनाती हैं। मनुष्य को जीवन जीने के साथ लोगों को जोडना भी सिखना चाहिए... क्योंकि बुरे समय से उबरने के लिए मार्गदर्शन देने वाला, मन हल्का करने वाला और हमारी भावनाएं समझने वाला कोई विश्वास करने लायक व्यक्ति हमारे करीब होना चाहिए।

जीवन तो हमेशा समस्याओं से भरा रहेगा परंतु अपने होंठों पर हमेशा एक मुस्कान बनाए रखें ... जीवन कई पलों से मिलकर बनता है। मानवता की चेतना, थोड़ी देखभाल, थोड़ा प्यार, थोड़ी मस्ती, थोड़ी शरारतें जो भी हो उसे स्वीकार कर जीना ही तो जीवन है! किसी भी परिस्थिति में जीवन तो जीना ही हैं, तो फिर खुशी से हसते हुए जीने में क्या परेशानी है...?

– मिलिंद आंगणे
उप प्रबंधक (सीआरएम–विपणन)

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएं पोस्ट से भेजें। आपका संदेश पोस्टकार्ड पर लिखकर अथवा आप इसे स्कैन कर ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

(आपकी शेती पत्रिका सदस्यता को नवीनीकृत करना आवश्यक है।) मोबाइल नंबर के साथ आरसीएफ शेती पत्रिका सदस्य सूची नवीनीकरण का काम चल रहा है। इस से पहले प्रतिक्रियाएं भेजने वाले सभी किसानों को सूची में शामिल किया जाएगा। कृपया यह ध्यान रखें कि किसान सदस्य का नाम, जिनसे 31 मार्च 2020 तक प्रतिक्रियाएं प्राप्त नहीं हुई हैं, उन्हें बाद में सुची में से निकाल दिया जाएगा।

हमारी शेती पत्रिका – हमारी प्रतिक्रिया!

किसान का पूरा नाम – ....

....

पता – ....

पोस्ट – ....तालुका – ....

जिला – ....

मोबाइल क्रमांक – ....

ईमेल आईडी – ....

जन्म तिथि – ....

आयु – ....शिक्षा – ....

शेती पत्रिका सदस्यता क्रमांक –

MH-M ____ - ______

आरसीएफ शेती पत्रिका पर प्रतिक्रिया –

....

....

....

....

....

....

....

....

-: प्रतिक्रिया भेजने के लिये हमारा पता :-

सहा. महा प्रबंधक (सीआरएम विभाग),
राष्ट्रीय केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, प्रियदर्शिनी, आठवीं मंजिल, पूर्व द्रुतगती महामार्ग सायन, मुंबई –400022

ई–मेलः crmrcf@gmail.com
टेलीफोन नं 022–25523022

प्रेरणादायक विचार

**जब जीवन आपको रोने के लिए सैकडों कारण देता है.......
तब उसे दिखा दो कि आपके पास हजार कारण है मुस्कुराने के लिए!**

मासिक पंचांग

फरवरी 2020, माघ / फागुन 1941

बुधवार दि. 19.02.2020	छत्रपति शिवाजी महाराज जयंती
शुक्रवार दि. 21.02.2020	संत गाडगेबाबा जयंती
बुधवार दि. 26.02.2020	स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर स्मृति दिवस
गुरुवार दि. 27.02.2020	मराठी राजभाषा दिवस
शुक्रवार दि. 28.02.2020	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

चुटकुला

मैनेजर (एचआर) – आप कहां गए थे?
कर्मचारी– बाल कटवाने के लिए ..
मैनेजर (एचआर) – ऑफिस टाइमिंग में?
कर्मचारी – बाल भी ऑफिस टाइमिंग में बढ़े है..
मैनेजर (एचआर) – तुम्हारे बाल तो जब तुम घर पर रहते हो तब भी बढ़ते होंगे...
कर्मचारी – तो मैने सारे बाल नहीं कटवाए हैं... जितने ऑफिस टाइमिंग में बढ़े थे, उतने ही कटवाए हैं !!

ग्राफिटी

सुधरना और बिगड़ना व्यक्ति के विचार और स्वभाव पर निर्भर करता है, हालतों पर नहीं!

*वो दिनभी बड़े अच्छे थे ...
जब घड़ी किसी एक व्यक्ति के पास हुआ करती थी, और समय सभी के पास, अब घड़ी तो सभी के पास है, लेकिन समय किसी के पास नहीं है!*

"जो सुख में साथ दे वो रिश्ते होते हैं और जो दुःख में साथ दें वो फरिश्ते होते हैं।"

शेती पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त की गई रायें संबंधित लेखकों–लेखिकाओं की हैं। प्रबंधन भी इनसे सहमत हो यह जरूरी नहीं है।
– संपादक, आरसीएफ शेती पत्रिका।

आधुनिक कृषि तकनीक का आविष्कार
जैविक वृद्धि संवर्धक उद्घाटन समारोह, जिला–नाशिक

आरसीएफ जैविक वृद्धि संवर्धक (OGS) इस उत्पाद का उद्घाटन समारोह नासिक क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस उत्पाद का उद्घाटन आरसीएफ के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री. एस. सी. मुडगेरीकर के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के लिए श्री. के. यू. थंकाचन, निदेशक (विपणन), श्री. एन. एच. कुरणे, कार्यकारी निदेशक (विपणन), श्री. मुकुंद रिसवाडकर, महाप्रबंधक (विपणन), श्री. सुनील भावसार, उप महाप्रबंधक (विपणन), श्री. नरेंद्र कुमार, सहा. महाप्रबंधक (सीआरएम–विपणन), श्री. गणेश वरगंटीवार, प्रबंधक (सीआरएम), श्री. प्रसाद आणावकर, प्रबंधक और क्षेत्रीय प्रभारी (नाशिक) के साथ–साथ धुळे, नंदुरबार, नाशिक और जळगाव जिला प्रभारी, आरसीएफ कृषि अनुसंधान और जैव तकनीकी विभाग के अधिकारी, जिले में आरसीएफ के आधिकृत उर्वरक विक्रेता और प्रगतिशील किसान आदि उपस्थित थे।

आरसीएफ उर्वरकों के फायदे अपार,
उत्पादन मिले अपरंपार!
RCF
ORGANIC FERTILIZER
RCF's
सुफला
15:15:15
उज्ज्वला
बायोला
MICHOLA
आरसीएफ के गुणवत्ता पूर्ण और उत्कृष्ट
उर्वरकसभी फसलों के लिए लाभदायक हैं।
राष्ट्रीय केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
पंजीकृत कार्यालयः 'प्रियदर्शिनी', ईस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, सायन, मुंबई –400 022.
वेब साइटः ● www.rcfltd.com ● rcfkisanmanch फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम पर अनुसरण करें!
आरसीएफ किसान केयर (टोल फ्री क्रमांक) :1800 22 3044

CRM, RCF